भूमिका

'भारत छोड़ो आंदोलन' विश्व इतिहास में शुरू से ही आश्चर्य का विषय रहा है। भारत छोड़ो आंदोलन की शुरूआत 8 अगस्त 1942 को हुई थी, जिसे 'अगस्त क्रांति' के नाम से भी जाना जाता है। अगस्त क्रांति की तुलना-फ्रांस के 'वैस्टिल' के पतन या रूस के अक्टूबर की क्रांति से की जा सकती है।

राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में भारत छोड़ो आंदोलन का एक अपना अलग महत्व है। भारत छोड़ो आंदोलन के पूर्व विषमताओं में जकड़ा हुआ था। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारत को जबरन घसीटा जा रहा थ। यह बात भारतीय नेताओं को नागवार गुजर रही थी और धुरी राष्ट्र भारत की तरफ तेजी से बढ़ रहे थे ऐसे में गांधी जी का ब्रिटेन की सहायता को लेकर शीर्ष नेताओं में उनके प्रति द्वेष था। ब्रिटेन भारत की आजादी के लिए उचित समय की तलाश की बात कह रहा था। उसी समय गांधीजी का भारत छोड़ो आंदोलन की घोषणा करने से और भी उथल-पुथ मच जाता है। कुछ भारतीय नेता इसे असमय कहकर खारिज कर देते हैं, इसमें सी. राजगोपालचारी प्रमुख थे। तमाम विरोधों के बावजूद यह आंदोलन सफल रहा। इसलिए भी इस आंदोलन का विशेष महत्व शुरू से रहा है।

यह आंदोलन इतना वृहद रूप ले लेगा यह किसी को आभास न था। ऐसे में आम जन की भागीदारी होती है और यह सफल हो जाता है। क्योंकि लोगों में आक्रोश पहले से व्याप्त था बस मौके की तलाश थी जैसे ही लोगों को मौका मिला जगह-जगह रेल पटरियां, डाक, तार सरकारी इमारतें नष्ट करने लगे। इस आंदोलन में लोग खुद अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर रहे

थे। जहां-जहां प्रशासन आंदोलनकारियों के विरोध को दबाती दूसरे जगह और भी तेजी से लोग उठ खड़े होते।

इस आंदोलन हिंदी समाचार पत्रों की भूमिका अहम रही है। समाचार पत्र। समाचार पत्र किसी भी राष्ट्र का आइना होता है और आज के परिप्रेक्ष्य में देखें तो इसे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है।

1942 के आंदोलन में समाचार-पत्रों का एक अपना चरित्र होता था। संपादन व पत्रकारों के हृदय में स्वाधीनता प्रथम प्रधान लक्ष्य था। पत्रकारों के आदर्श तिलक, गणेशंकर विद्यार्थी व गांधी हुआ करते थे। इन्हीं के नक्शे कदम पर चलकर पत्रकार अपनी पत्रकारिता करते थे।

यह मेरे लिए आश्चर्य का विषय है कि भारत छोड़ो आंदोलन को हुए 70 वर्षों से ऊपर हो रहा है लेकिन भारत छोड़ो आंदोलन वह हिंदी समाचार पत्र के बारे में काफी कुछ लिखा पढ़ा गया है। किंतु जब पूर्वोत्तर, उत्तर प्रदेश पूर्वांचल को इस संदर्भ में देखने पर जिसमें दोनों का समावेश हो कम मिलता है। कम से मेरा आशय तथ्यपूर्ण सप्रमाणित विवेचनात्मकता से है।

इस शोध प्रबंध हेतु मैंने शोध की जो रुपरेखा तैयार की, उसमें प्रथम अध्याय में मैंने 'भारत छोड़ो आंदोलन : संदर्भ एवं स्वरूप' क्या था, यह भारतीय इतिहास में इतना महत्वपूर्ण क्यों है और आजादी पाने में यह अपनी कैसे निर्णायक भूमिका अदा करता है? इसका प्रमुख रूप से विवेचन करने का प्रयास किया है।

द्वितीय अध्याय में 'हिंदी पत्रकारिता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि व उसका स्वरूप एवं विकास' का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है। साथ-ही-साथ हिंदी पत्रकारिता व भारत छोड़ो आंदोलन के बीच जो तालमेल था, उसका मैंने संक्षिप्त व्याख्या की है।

तृतीय अध्याय 'भारत छोड़ो आंदोलन पूर्वांचल व हिंदी समाचार पत्र' पत्रकारिता में आंदोलन की दृष्टि में पूर्वांचल की भूमिका व हिंदी समाचार पत्रों का आंदोलन की दृष्टि से विवेचनात्मक वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय 'भारत छोड़ो आंदोलन के संदर्भ में पूर्वांचल के हिंदी पत्रकारिता' की क्या विशेषता रही है? ये आंदोलन के समय किस प्रकार समाचार का प्रकाशित करते थे? क्योंकि भाषा थोड़ी भी उत्तेजक होने पर ब्रिटिश प्रशासन का कोपभाजन होना पड़ता था। इस पर अति संक्षेप में वर्णन किया गया है।

इन चारों अध्यायों के अध्ययन के बाद उपसंहार के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस लघु शोध-प्रबंध की सार्थकता तभी होगी जब यह भविष्य में किसी के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया गया है।

उद्देश्य

भारत छोड़ो आंदोलन में हिंदी समाचार की क्या भूमिका रही है तथा पूर्वांचल के क्षेत्र में इसे कितनी सफलता मिलती है। इसका अध्ययन किया गया है।

क्षेत्र

भारत छोड़ो आंदोलन एवं हिंदी समाचार पत्र विशेष संदर्भ पूर्वांचल तक ही सीमांकित है।

साहित्य पुनर्वालोकन

इस संबंध में जे. नटराजन कृत भारतीय पत्रकारिता का इतिहास, मूलरूप से अंग्रेजी 2002 में प्रकाशित हुई जिसमें भारतीय पत्रकारिता का इतिहास का वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त 'हिंदी पत्रकारिता: विविध आयाम' भाग-1-2 वेद प्रताप वैदिक कृत पत्रकारिता के बारे में वर्णन किया है।

इसके अंतर्गत पत्रकारिता का इतिहास आयाम को दर्शाया गया है। जिसमें हिंदी पत्रकारिता का उद्भव विकास भाषायी पत्रकारिता प्रादेशिक पत्रकारिता को केंद्र में रखकर लिखा गया है।

सुमित सरकार 'आधुनिक भारत' नामक पुस्तक में भारत की स्वाधीनता की लड़ाई 1857 से लेकर 1947 तक की गई जिसमें वृहद रूप से आंदोलन की चर्चा की गई है।

रजनी पाम दत्त 'आज का भारत' नामक पुस्तक में ब्रिटिशों की नीति भारत की विषमता, आंदोलन व राजनीतिक आर्थिक पहलुओं पर विस्तृत चर्चा की गई है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध हेतु मैंने पूर्वांचल के उन महत्वपूर्ण स्थानों का भ्रमण किया जो मेरे शोध के साथ-साथ विभिन्न संग्राहलयों, पुस्तकालय के अध्ययन के उपरांत यह शोध कार्य पूर्ण हुआ है। इस लघु शोध में मुख्य रूप से प्राथमिक स्रोत का उपयोग किया गया है, द्वितीयक स्रोत का उपयोग यथा प्रसंग किया गया है।

दिनांक:

स्थान:

उपसंहार

इस अध्ययन से स्पष्ट है कि भारत ब्रिटिश शासन के अधीन सदियों तक रहा है। भारत की स्वाधीनता के लिए भारतीयों ने सर्वप्रथम 1857 में आवाज उठाया किंतु इस आवाज को बड़ी निर्दयता के साथ दबा दिया गया।

असहाय व निरीह भारतीयों पर अपने को योग्य व शिक्षित साबित कर ब्रिटिश शासन कर रहे थे। उन्हीं की शिक्षा व नीति प्राप्त कर भारतीयों ने 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की जो आजादी के लिए लगातार संघर्ष करती रही। यद्यपि भारतीयों को आजादी पाने में विभिन्न पड़ाव आए पर बार-बार ब्रिटिश सरकार का कोपभाजन बनना पड़ा। किंतु भारतीयों ने भरपूर साहस व धैर्य का परिचय दिया।

बीसवीं सदी में गांधी ने जब भारतीय कांग्रेस में प्रवेश किया तो उस समय स्थिति बहुत ही उथल-पुथ थी, आजादी के लिए कोई विशेष जनाधार भी न था। गांधी ने सर्वप्रथम उस कमजोरी को पकड़ा जो जड़ में थी और उसके बाद धीरे-धीरे जनाधार बनाना शुरू किया। गांधी ने ही भारतीयों को आजादी पाने के लिए अहिंसात्मक लड़ाई लड़ने का सूत्र दिया। गांधी का अहिंसात्मक प्रयोग 'चंपारण खेड़ा', अहमदाबाद में सफल हो चुका था। उसके बाद असहयोग आंदोलन के नींव उन्होंने रखी। किंतु इस आंदेलन में हिंसा होने से वे आंदोलन को वापस ले लेते हैं। वहीं भारत छोड़ो आंदोलन में हिंसा होने से वे इसका वापस ले लेते हैं, वहीं भारत छोड़ो आंदोलन में हिंसा होने के बाद भी वह मौन रहते हैं क्योंकि गांधी जी का मानना था कि 'अगर कायरता व हिंसा में से किसी एक को चुनना पड़े तो वह हिंसा को चुनेंगे।' भारत छोड़ो आंदोलन एक ऐसा आंदोलन जो विश्व इतिहास के पन्नों में स्वर्णअक्षरों में अंकित है क्योंकि यह आंदोलन अपने हक के लिए लड़ा गया था।

सन 1942 की क्रांति के समय तकरीबन 90 समाचार पत्रों का प्रतिबंध के कारण प्रकाशन बंद करना पड़ा था। ब्रिटिश शासन सख्त रूख अख्तियार

किए हुए थी जहां कहीं भी उसे विवादित या उत्तेजित समाचार मिलता उस समाचार पत्र को जुर्माना या प्रतिबंध का शिकार होना पड़ता था।

सन 1942 की क्रांति में पूर्वांचल के जिन समाचार पत्रों ने महती भूमिका निभाई उसमें दैनिक 'आज' अग्रणी था। दैनिक आज के प्रेरणास्रोत गांधी व संपादक बाबूराव विष्णु पराड़कर जी थे। पराड़कर जी सदैव समाचार पत्र में किसी भी तरह उत्तेजित शब्दों का प्रयोग नहीं करते। वे समाचार के माध्यम से ही अपनी बात लोगों तक पहुंचा देते थे।

8 अगस्त, 1942 की क्रांति में जिस समय पूर्वी उत्तर प्रदेश का बलिया (जिला) अपने आपको कुछ दिनों के लिए पूर्णतः आजाद कर लिया था उस समय भी 'आज' इस खबर को उत्तेजित तरीके से नहीं बल्कि समाचार की तरह ही प्रकाशित किया था। यद्यपि आज भी ब्रिटिश प्रशासन का कोपभाजन बनना पड़ा, किंतु जुर्माना भरने के बादयह अनवरत चलता रहा।

जिस प्रकार से ब्रिटेन का 'टाइम्स समाचार पत्र' सर्वश्रेष्ठ था, उन दिनों संपादक पराड़क जी का हिंदी समाचार पत्र 'आज' शिरोमणी था।

वस्तुतः 'भारत छोड़ो आंदोलन' भारत के कोने-कोने में फैला हुआ था, जिस प्रकार से पूर्वी उत्तर प्रदेश का पूर्वांचल व बिहार शामिल रहा उससे ब्रिटिश राज की नींव डगमगा गई। वास्तव में कोई क्रांति या विद्रोह रौंदी हुई जनता की दबी हुई आंकाक्षाओं का बाह्य रूप होती है। यद्यपि 'भारत छोड़ो आंदोलन' में कई समाचार पत्रों का योगदान रहा है किंतु इसमें 'आज' पूर्वी उत्तर प्रदेश में अग्रणी रहा है।

'भारत छोड़ो आंदोलन' का महत्व सिर्फ इसलिए नहीं है कि यह हमारी आजादी की आखिरी लड़ाई थी। इस आंदोलन का पूर्णकालिक महत्व

भी है। प्रत्येक समाज का प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में एक ऐसा क्षण आता है जब उसे सारे मोह छोड़कर 'करो या मरो' की भावना से युद्ध में शरीक होता है।

इसी भावना को लेकर हर व्यक्ति 'भारत छोड़ो आंदोलन' में कूद पड़ा था। और उसे देश की गुलामी से मुक्त होना था।

कोई भी आंदोलन असफल हो जाने के बाद यह अगले आंदोलन का प्रेरणा स्रोत बनता है। जिस कमी के चलते आंदोलन असफल होता है, वही कमी अग्रगामी आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार करता है। भारत छोड़ो आंदोलन में भूमिगत तरीके से जो नेता सक्रिय भूमिका निभा रहे थे, उनका संबंध पूर्वी उत्तर प्रदेश से रहा है।

भारत छोड़ो आंदोलन में अगर सबसे अधिक भूमिका किसी की रही है तो उन अखबारों की जिनको बार-बार ब्रिटिश हुकूमत का शिकार होना पड़ता था, फिर भी वे अदम्य साहस के साथ अपने पथ पर अडिग रहे।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में पूर्वी उत्तर प्रदेश में 'आज' अखबार के संपादक 'पराड़कर जी' के नेतृत्व में प्रकाशित होता था। 'भारत छोड़ो आंदोलन' में 'आज' अखबार की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। उन्होंने समय-समय पर अखबार के माध्यम से क्रांतिकारियों को संबल प्रदान किया और उनको आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। प्रस्तुत शोध में पूर्वांचल को विशेष भूमिका रही है और आंदोलन के प्रथम क्रांति से ही पूर्वांचल अग्रणी रहा है। भारत के प्रथम स्वाधीनता आंदोलन में जो अग्रणी भूमिका निभाता है वह सन 1942 की क्रांति में कैसे पीछे रह सकता था। जिसका अतीत अच्छा होता है वही उसके वर्तमान का प्रेरणास्रोत बनता है। इसलिए सन 1942 की क्रांति में अपनी विशेष भूमिका अदा करता है।

संदर्भ-ग्रंथ सूची